Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

सराफा व्यापार का ऐतिहासिक व वित्तीय अध्ययन (मध्यप्रदेश राज्य के शाजापुर जिले के विशेष संदर्भ में)

प्रवीण कुमार सोनी *

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय महाविद्यालय, माकड़ोन, जिला उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश –किसी उत्पाद की खरीद–बिक्री को व्यापार कहा जाता है। व्यापार का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। हमारे देश में सीमेंट, कपड़ा, कृषि या अन्य किसी उत्पाद की ही तरह सोने एवं चांदी से निर्मित उत्पादों का भी क्रय–विक्रय किया जाता है। जिस स्थान पर सोने–चांदी से निर्मित उत्पादों की खरीदी एवं बिक्री की जाती है उसे सराफा बाजार कहा जाता है। बहुमूल्य धातुओं में स्वर्ण (सोना) एवं रजत (चांदी) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण विश्व में स्वर्ण व रजत से बने आभूषणों का विशेष आकर्षण देखा जा सकता है। भारत में भी प्राचीन काल से ही इनका महत्व देखा गया हैं। इतिहास में सोने–चांदी के कारण हुए बड़े–बड़े युद्धों का वर्णन हैं। प्राचीन समय में राजा–महाराजाओं द्वारा अपने मंत्रियों व नागरिकों को विशेष अवसरों पर उपहार स्वरूप विभिन्न रूपों में सोना व चांदी प्रदान किया जाता था। स्वर्ण व रजत का अधिक मात्रा में स्वामी होना, वर्तमान समाज में प्रतिष्ठा व सम्पन्नता का सूचक माना जाता है। हमारे देश के लगभग प्रत्येक परिवार, चाहे वह अमीर हो या गरीब, उसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष संबंध स्वर्ण व रजत व्यापार से है। हमारे देश में विवाह, जन्मदिवस, वर्षगांठ आदि अवसरों पर दिये जाने वाले उपहारों में बहुमूल्य धातुओं के उपहार का विशेष महत्व है। प्रत्येक पिता अपनी बेटी के विवाह हेतु उसके जन्म से ही योजनाऐं बनाने लगता है। इन योजनाओं में बेटी को उपहार स्वरूप दिये जाने वाले सोने–चांदी के आभूषण भी शामिल हैं। सोने एवं चांदी से निर्मित आभूषणों के क्रय–विक्रय के लिए हमारे देश के लगभग प्रत्येक शहर में एक बाजार उपलब्ध है जिसे सराफा बाजार कहा जाता है। इस बाजार में विभिन्न व्यापारियों द्वारा अपनी पूंजी लगाकर स्वर्ण व रजत से बने आभूषणों व अन्य उत्पादों का व्यापार किया जाता है। इस बाजार में क्रय–विक्रय होने वाले प्रमुख उत्पादों में सोने व चांदी से बने विभिन्न आभूषण व सिक्के शामिल हैं। हमारे देश के मध्य में स्थित मध्यप्रदेश राज्य के शाजापुर जिले में व जिले के विभिन्न नगरों में भी सराफा बाजार स्थापित हैं। सराफा बाजार का हमारे देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। सराफा व्यापारी एवं इस व्यापार के मध्यस्थों द्वारा अनेकों व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया जाता है। सोना एवं चांदी अत्यंत मूल्यवान एवं प्रतिष्ठासूचक धातु है। जिसका व्यापार करने के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है इसीलिए वर्तमान में सराफा व्यापार का अधिकांश स्वामित्व पूंजीपतियों के हाथ में है।

शब्द कुंजी – सराफा बाजार, सोना–चांदी, आभूषण, पूंजी, टर्नओव्हर।

प्रस्तावना – किसी उत्पाद या वस्तु की खरीद–बिक्री को ही व्यापार कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी उत्पाद को पुन: विक्रय के उद्देश्य से खरीदता है और उसके पश्चात् उसे बेच देता है तो यह एक व्यापारिक क्रिया कहलाती है। व्यापार के लिये किसी उत्पाद का क्रय–विक्रय का होना अत्यंत आवश्यक है। व्यापार का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। सोने एवं चांदी से निर्मित आभूषणों के क्रय–विक्रय के लिए हमारे देश के लगभग प्रत्येक शहर में एक बाजार उपलब्ध है जिसे सराफा बाजार कहा जाता है। इस बाजार में विभिन्न व्यापारियों द्वारा अपनी पूंजी लगाकर स्वर्ण व रजत से बने आभूषणों व अन्य उत्पादों का व्यापार किया जाता है। इस बाजार में क्रय–विक्रय होने वाले प्रमुख उत्पादों में सोने व चांदी से बने विभिन्न आभूषण व सिक्के शामिल हैं।

शोध कार्य के उद्देश्य – प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य संक्षेप में इस प्रकार हैं –

1. शाजापुर जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. शाजापुर जिले में सराफा बाजार के प्रादुर्भाव एवं विकास का अध्ययन करना।
3. सराफा व्यापार के लिए आवश्यक विनियोजित पूंजी का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि – शोध प्रविधि का आशय शोध कार्य करने के विशिष्ट नियम अथवा विधि से है। दूसरे शब्दों में किसी शोध कार्य को सम्पन्न करने के लिये अपनायी जाने वाली विशिष्ट तकनीक को ही शोध प्रविधि कहते हैं। इसके अंतर्गत शोध समस्या के बारे में जानकारियों की पहचान, शोध कार्य के क्षेत्र का चयन, शोध से संबंधित समंकों का संकलन, उनका वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण की प्रक्रिया शामिल है।

अ. अध्ययन का क्षेत्र – मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेश राज्य का शाजापुर जिला है। इस जिले के अंतर्गत सराफा व्यापार का अध्ययन किया जायेगा।

ब. समकों का संकलन – प्रस्तुत शोध पत्र शोधार्थी द्वारा किए गए बाजार सर्वेक्षण से एकत्रित प्राथमिक समंकों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त शोध पत्र में द्वितीयक समंकों का भी प्रयोग किया गया है।

शोध पत्र का मुख्य भाग

शाजापुर जिले में सराफा बाजार का प्रादुर्भाव एवं विकास – मध्यप्रदेश का शाजापुर जिला मालवा क्षेत्र में स्थित है। शाजापुर जिला लगभग 400 वर्ष पुराना है। सन् 1640 में मुगल सम्राट शाहजहाँ ने वर्तमान शाजापुर

जिले की पहचान की। शाजापुर का प्राचीन नाम खाखराखेड़ी था जिसे परिवर्तित करके मुगल सम्राट शाहजहाँ के नाम पर शाजापुर रखा गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शाजापुर, मध्य भारत राज्य का हिस्सा बना जो 1 नवंबर 1956 से मध्यप्रदेश राज्य का हिस्सा कहलाया। 1 नवबर 1956 को नवगठित मध्यप्रदेश के साथ ही शाजापुर को भी जिला बनाया गया। शाजापुर जिले का प्रमुख शहर शाजापुर ही है। प्रारंभ में इसका स्वरूप एक ग्राम की तरह ही था। ग्राम के विकास के साथ-साथ मानव अपनी आवश्यकतानुसार विभिन्न आर्थिक एवं व्यापारिक क्रियाऐं भी करने लगा। धीरे-धीरे ग्राम नगर में परिवर्तित होता चला गया। प्रारंभ में विभिन्न व्यापारिक क्रियाऐं जाति अनुसार ही की जाती थी, लुहार लोहे का कार्य करता था, सुनार स्वर्ण एवं रजत आभूषणों का, विश्वकर्मा बंधु लकड़ी का कार्य किया करते थे। इस प्रकार अन्य व्यापारिक क्रियाओं के साथ-साथ स्वर्ण व रजत आभूषणों के निर्माण व विक्रय की व्यापारिक क्रिया भी छोटे पैमाने पर प्रारंभ हो चुकी थी। शाजापुर के विकास क्रम के साथ-साथ स्वर्ण व रजत आभूषणों के व्यापार का भी विकास होता चला गया और व्यापारिक क्रिया 2 भागों में विभक्त हो गई -

1. **सराफ** - शहरों के एसे व्यक्ति जो बड़े पूंजीपति वर्ग से आते हैं, वे स्वर्ण एवं रजत का क्रय - विक्रय का कार्य करने लगे उन्हें सराफ कहा गया। मोटे तौर पर ये पूंजीपति वर्ग आभूषणों का निर्माण नहीं करता बल्कि केवल निर्मित आभूषणों का व्यापार करता हैं। इसके अतिरिक्त ये बहुमूल्य धातुओं को गिरवी रखकर उधार धन देने का कार्य भी करते हैं।

2. **सुनार** - प्राचीन समय से जातिगत आधार पर जो व्यापारिक क्रियाऐं की जाती रहीं है उसी अनुसार शाजापुर में भी स्वर्ण एवं रजत आभूषणों के निर्माण का कार्य मुख्यत: सुनार जाति के लोगों द्वारा ही किया जाता है। आभूषणों के निर्माण के अतिरिक्त सुनार जाति के पूंजीपति व्यापारियों द्वारा निर्मित आभूषणों का व्यापार भी किया जाता है।

शाजापुर जिले के सराफा बाजार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि - जिले के विभिन्न नगरों में स्वर्ण व रजत आभूषणों के क्रय विक्रय का व्यापार सराफ लोगों द्वारा एक निश्चित स्थान पर किया जाता था अर्थात् व्यापार के लिये पृथक से बाजार स्थापित किये गये, जिन्हें हम सराफा बाजार कहते हैं।

प्रारंभ में स्वर्ण व रजत आभूषणों का व्यापार व निर्माण कार्य बहुत कम व्यापारियों द्वारा किया जाता था किंतु जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ इस व्यापार में संलग्न व्यक्तियों की संख्या भी बढ़ती चली गई। सन् 1900 के आस पास शाजापुर जिले में इस व्यापार में संलग्न व्यापरियों की दुकानों की संख्या लगभग 20 थी जो बढ़कर आजादी के तत्काल बाद 1950 में लगभग 50 हो गई। वर्तमान में शाजापुर जिले में स्वर्ण व रजत व्यापार में संलग्न व्यापारियों की दुकानों की संख्या लगभग 300 है जिसमें से 240 दुकानें अपने-अपने नगर के सराफा एसोसिएशन के तहत पंजीकृत है तथा शेष लगभग 60 दुकानें अपंजीकृत है। प्रारंभ में सराफा बाजार का समय प्रात: 10 बजे से शात 6 बजे तक रहता था क्योंकि सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में ही निर्माण, जांच व विक्रय संबंधी सभी कार्य अच्छी तरह संपन्न किये जा सकते थे किंतु वर्तमान समय में पर्याप्त बिजली की सुविधा होने से रात्रि 9-10 बजे तक भी व्यापार संभव होता है।

औद्योगिक दृष्टि से शाजापुर जिले को पिछड़ा हुआ कहा जा सकता है किंतु व्यापारिक दृष्टि से जिले ने काफी उन्नति की है। शाजापुर जिले में जीवन उपयोगी सभी प्रकार के व्यापारिक केन्द्र स्थापित है। मिनी मुम्बई अर्थात् इन्दौर और मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल यहां से नजदीक होने के कारण यहां के व्यापारियों को काफी सुविधा प्राप्त है। शाजापुर जिले के विभिन्न नगरों, शुजालपुर, अकोदिया, कालापीपल, बेरछा, गुलाना, कालीसिंध, पोलायकला आदि में अपना पृथक - पृथक सराफा बाजार स्थापित है। जहां आभूषणों के निर्माण व क्रय-विक्रय में संलग्न हजारों लोगों को रोजगार प्राप्त है।

सराफा बाजार के प्रमुख मध्यस्थों का अध्ययन -शाजापुर जिले के सराफा बाजार में कार्यरत प्रमुख मध्यस्थों का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है -

तालिक क्रमांक 1.1 - सराफा बाजार में कार्यरत प्रमुख मध्यस्थों का विवरण

क्र.	मध्यस्थ का नाम	संस्थानों की संख्या	कार्यरत व्यक्तियों की संख्या
1.	सराफा व्यापारी	300	1225
2.	आभूषण निर्माता	120	410
3.	धातुओं के शोधन एवं गलाई में संलग्न व्यापारी	20	60
4	तार पट्टी बनाने में संलग्न व्यापारी	25	50
5.	मीना का कार्य करने में संलग्न	15	40
6.	गठाई के कार्य में संलग्न	20	40
7.	चपड़ी भरने में संलग्न	10	25
8	छिलाई का कार्य करने में संलग्न	15	25
9	सोने एवं चांदी का टंच निकालने में संलग्न व्यापारी	20	40

(स्त्रोत - शोधार्थी द्वारा बाजार सर्वेक्षण के आधार पर)

शाजापुर जिले के स्वर्ण एवं रजत व्यवसाय में आभूषणों का निर्माण कार्य करने वाले कारीगर की संख्या लगभग 120 है, जो आभूषण बनाने का कार्य करते हैं। प्राचीन समय में यान्त्रिक साधनों का अभाव था इसलिये आभूषणों के निर्माण कार्य में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था, किंतु वर्तमान वैज्ञानिक युग में नई-नई तकनीकों व मशीनों का आविष्कार हुआ है, जिसके चलते इन तकनीकों व मशीनों के प्रयोग से अब आभूषणों का निर्माण कार्य काफी सरलता से पूर्ण किया जा सकता है। नई तकनीक की वजह से ही नित नई डिजाईनों का भी निर्माण संभव हो पाया है। भिन्न - भिन्न प्रकार के आभूषणों के निर्माण की दर अलग-अलग ली जाती है, कुछ सामान्य आभूषणों के निर्माण की मजदूरी दर निम्न तालिका में गयी है जो कि इस प्रकार है -

तालिका क्र. - 1.2 : स्वर्ण आभूषणों के निर्माण की मजदूरी दर का विवरण

क्र.	आभूषण का नाम	मजदूरी की दर (प्रति ग्राम रू. में)
1	हार	300 रू से 1000/- प्रति ग्राम
2	बाली	300 रू से 500/- प्रति ग्राम
3	झुमकी	300 रू से 800/- प्रति ग्राम
4	टीका	300 रू से 500/- प्रति ग्राम
5	अंगूठी	300 रू से 500/- प्रति ग्राम
6	मंगलसूत्र	300 रू से 800/- प्रति ग्राम
7	चेन	300 रू से 500/- प्रति ग्राम

8	पेची	300 रू से 500/- प्रति ग्राम
9	बाजूबन्द	300 रू से 1000/- प्रति ग्राम
10	कमर कन्दोरा	300 रू से 1000/- प्रति ग्राम
11	हाथफूल	300 रू से 1000/- प्रति ग्राम
12	आढ	300 रू से 500/- प्रति ग्राम

(स्त्रोत - शोधार्थी द्वारा बाजार सर्वेक्षण के आधार पर)

तालिका की विवेचना - उपरोक्त तालिका क्रमांक 1.2 के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि स्वर्ण के आभूषण की मजदूरी मेहनत, डिजाइन, मीना आदि पर निर्धारित होती है, स्वर्ण आभूषण निर्मित करने का कार्य अत्यंत कलात्मकता, कुशलता व बारिकियों से परिपूर्ण है, जिसमें बहुत अधिक मेहनत की आवश्यकता होती है। इसी कारण स्वर्ण आभूषणों के निर्माण की मजदूरी दर अधिक होती है। वर्तमान में स्वर्ण आभूषणों की मजदूरी दर स्वर्ण के मूल्य का लगभग 10 प्रतिशत है।

तालिका क्र. - 1.3: चांदी के आभूषणों के निर्माण की मजदूरी दर का विवरण

क्र	आभूषण का नाम	मजदूरी की दर
1	कड़ी	2500 रू प्रति किलो ग्राम
2	टांवला	1500 रू प्रति किलो ग्राम
3	कमर कन्दोरा	2000 रू प्रति किलो ग्राम
4	अंगूठी	200 से 1000 प्रति नग
5	कड़े	200 से 1000 प्रति नग
6	चेन	500 से 1000 प्रति नग

(स्त्रोत - शोधार्थी द्वारा बाजार सर्वेक्षण के आधार पर)

तालिका की विवेचना - उपरोक्त तालिका क्रमांक 1.3 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि रजत आभूषणों की मजदूरी की दर कम होती है। रजत के आभूषण अधिक वजन के होते हैं और मुख्यत: ग्रामीण क्षेत्र में प्रयोग किये जाते हैं, इनमें कलात्मकता भी सीमित होती है, अत: रजत आभूषणों की मजदूरी की दर कम रहती है। रजत आभूषणों पर ली जाने वाली मजदूरी दर लगभग 3 से 5 प्रतिशत है।

शाजापुर जिले के स्वर्ण एवं रजत व्यापार में पूंजी विनियोजन का अध्ययन - शाजापुर जिले के स्वर्ण एवं रजत व्यापार में प्रमुखत: दो प्रकार के लेन देन होते हैं। प्रथम स्वर्ण एवं रजत का क्रय-विक्रय तथा द्वितीय गिरवी का व्यवसाय। सामान्यत: अधिकांश व्यापारी स्वर्ण एवं रजत के क्रय-विक्रय का व्यापार करते हैं और कुछ व्यापारी स्वर्ण एवं रजत के क्रय-विक्रय के साथ-साथ गिरवी का लेन-देन भी करते हैं। इस व्यवसाय में पूंजी का विनियोजन व्यापार स्वामियों द्वारा ही किया जाता है।

स्वर्ण एवं रजत बाजार में मूल्यवान धातुओं, सोना एवं चांदी का व्यापार किये जाने से इन व्यापार की स्थापना में अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है। सोने एवं चाँदी की आसमान छूती कीमतों के कारण छोटे आभूषण विक्रेताओं के लिए व्यवसाय करना दूभर हो गया है। पिछले कुछ वर्षों में सोने और चांदी के मूल्य में बढ़ोतरी होने के कारण इन विक्रेताओं को व्यापार करने के लिए 100 फीसदी ज्यादा कार्यशील पूंजी की आवश्यकता होती रही है। अधिक पूंजी की जरूरत होने के कारण उनके लिए कारोबार करने की लागत बढ़ रही है। सामान्यत: आभूषण की छोटी सी दुकान खोलने के लिए कम से कम 1 किलोग्राम सोना और 10 किलोग्राम चाँदी का माल होना आवश्यक है।

वर्ष 2015 में सोने का भाव करीब 26000/-रू. प्रति तौला और चाँदी का भाव 37000/-रू. प्रति किलोग्राम था, इस हिसाब से उस समय करीब 30 लाख रुपए के निवेश से आभूषण की दुकान खोली जा सकती थी, लेकिन सोने के वर्तमान मूल्य 60,000/-रू. प्रति तौला और चांदी 75000/-रु. प्रति किलोग्राम है इस लिहाज से अब उसी आकार की दुकान खोलने के लिए लगभग 67 लाख रु. के निवेश की जरुरत है। इस प्रकार स्पष्ट है कि आभूषण की दुकान चलाने के लिए कार्यशील पूंजी की जरुरत लगभग दुगुनी हो गयी है। अत: सोना चाँदी महँगा होने से आभूषण का कारोबार अब बड़े व्यापारियों के हाथ में सिमट रहा है।

तालिका क्रमांक - 1.4: शाजापुर जिले के सराफा बाजार में व्यापारियों द्वारा आभूषणों में विनियोजित पूंजी

विकल्प	विनियोजित पूंजी	प्रतिशत
अ.	50 लाख रूपये तक	64
ब.	50 लाख रूपये सें 1 करोड़ रूपये तक	23
स.	1 करोड़ से 3 करोड़ रूपये तक	9
द.	3 करोड़ से 5 करोड़ रूपये तक	1
इ.	5 करोड़ रूपये से अधिक	2

(स्त्रोत - शोधार्थी द्वारा बाजार सर्वेक्षण के आधार पर)

रेखाचित्र क्रमांक - 1.1 : शाजापुर जिले के सराफा बाजार में व्यापारियों की विनियोजित पूंजी

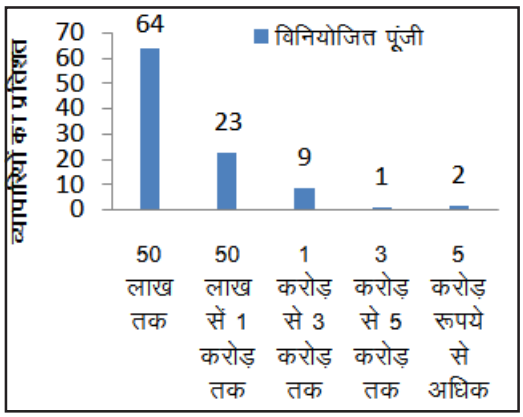

तालिका की विवेचना - उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि शाजापुर जिले के सराफा बाजार के कुल व्यापारियों में से अपने व्यापार में 50 लाख रूपये तक पूंजी विनियोजित करने वाले व्यापारी 64 प्रतिशत है, 50 लाख से 1 करोड़ तक पूंजी विनियोग करने वाले व्यापारी 23 प्रतिशत है, 1 करोड से 3 करोड़ तक पूंजी विनियोग करने वाले व्यापारी 9 प्रतिशत है, 3 करोड से 5 करोड़ तक पूंजी विनियोग करने वाले व्यापारी 1 प्रतिशत हैं तथा 5 करोड से अधिक पूंजी विनियोग करने वाले व्यापारी 2 प्रतिशत हैं।

शाजापुर जिले के सराफा बाजार में व्यापारियों के व्यवसाय के टर्नओव्हर का विवरण - शाजापुर जिले के स्वर्ण एवं रजत व्यवसाय में व्यापारियों द्वारा किये जाने वाले वार्षिक टर्नओव्हर का विवरण नीचे दी गयी तालिका में दर्शाया गया है. -

तालिका क्रमांक – 1.5, व्यवसाय का टर्नओव्हर

विकल्प	वार्षिक टर्नओव्हर	प्रतिशत
अ.	50 लाख रूपये वार्षिक तक	77
ब.	50 लाख से 2 करोड़ रूपये वार्षिक तक	18
स.	2 करोड़ से 5 करोड़ रूपये वार्षिक तक	4
द.	5 करोड़ रूपये वार्षिक से अधिक	1

(स्त्रोत – शोधार्थी द्वारा प्रश्नावली के माध्यम से संकलित समंक)

रेखाचित्र क्रमांक – 1.2, व्यवसाय का टर्नओव्हर

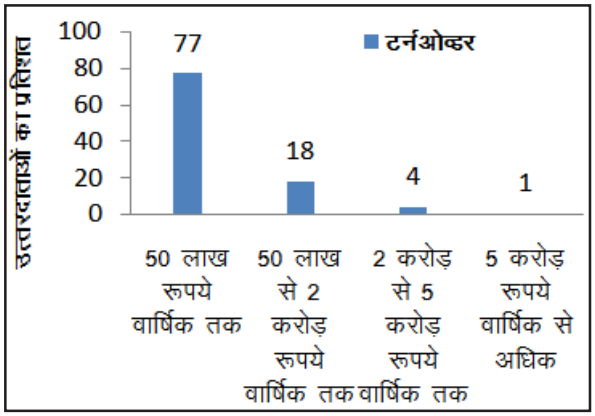

तालिका की विवेचना – उपरोक्त तालिका में व्यापारियों के टर्नओव्हर (कुल विक्रय) का अध्ययन किया गया है। तालिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि शाजापुर जिले के सराफा बाजार में 77 प्रतिशत व्यापारियों की कुल वार्षिक बिक्री 50 लाख रूपये वार्षिक तक है, 18 प्रतिशत व्यापारियों की कुल वार्षिक बिक्री 50 लाख रूपये से 2 करोड़ रूपये वार्षिक तक है, 4 प्रतिशत व्यापारियों की कुल वार्षिक बिक्री 2 करोड़ से 5 करोड़ रूपये वार्षिक तक है और सिर्फ 1 प्रतिशत व्यापारियों की कुल वार्षिक बिक्री 5 करोड़ रूपये वार्षिक तक है।

शोध निष्कर्ष – शोध पत्र से यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश राज्य के मध्य में स्थित उज्जैन संभाग के जिले शाजापुर के सराफा बाजार का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इस जिले में बड़े पैमाने पर आभूषणों का निर्माण एवं विक्रय का कार्य किया जाता हैं। सराफा बाजार की इस जिले के निवासियों को बड़ी संख्या में रोजगार उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका है। शोध पत्र से यह भी स्पष्ट है कि सराफा व्यापार स्थापित करने में बड़ी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है। वर्तमान में स्वर्ण एवं रजत का मूल्य उच्चतम स्तर पर है जिससे इस प्रकार का व्यापार स्थापित करना मध्यमवर्गीय व्यक्ति या परिवार के लिए संभव नहीं है। शाजापुर जिले में भी अत्यधिक पूंजी की इसी आवश्यकता के कारण यह व्यापार जिले के बड़े पूंजीपतियों के आधिपत्य में है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. व्यावसायिक अर्थशास्त्र– डॉ. जे.पी.मिश्रा
2. व्यावसायिक अध्ययन – डॉ. कुमावत एवं चौधरी
3. सांख्यिकी के सिद्धांत – डॉ. शुक्ल एवं सहाय
4. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जिला शाजापुर
5. प्रमुख समाचार–पत्र एवं पत्रिकाऐं – दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, नई दुनिया

****